1960C Anand Seth and Anand Shravak

Anand Seth (In Anekant, April 1960)

Anand Shravak (in Sanmati Sandesh, 1965)

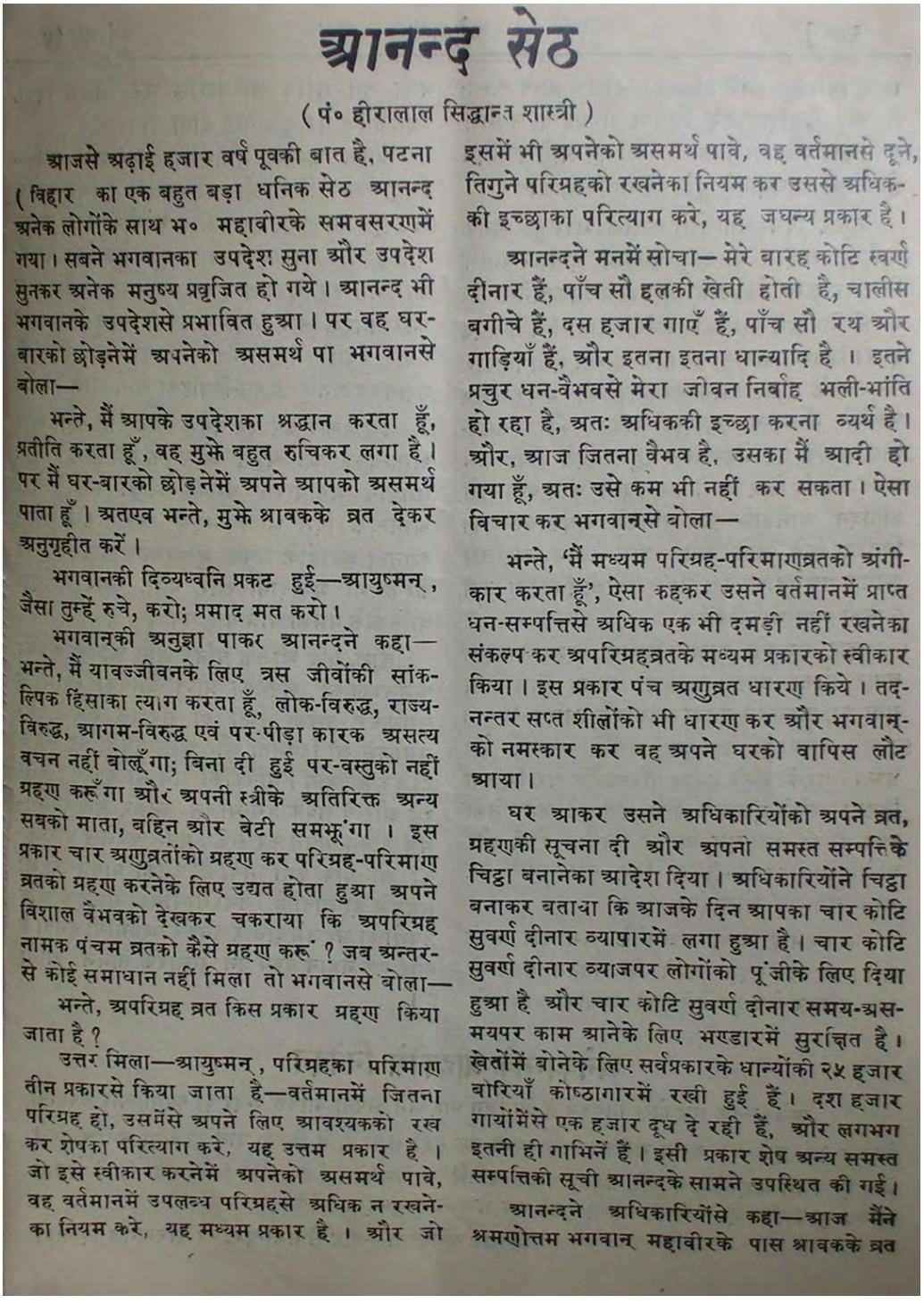

आनन्द सेठ

(पं० हीरालाल सिद्धान्त शास्त्री)

आजसे अढ़ाई हजार वर्ष पूवकी बात है, पटना (बिहार का एक बहुत बड़ा धनिक सेठ आनन्द अनेक लोगोंके साथ भ० महावीरके समवसरणमें गया। सबने भगवानका उपदेश सुना और उपदेश सुनकर अनेक मनुष्य प्रवृजित हो गये। आनन्द भी भगवानके उपदेशसे प्रभावित हुआ। पर वह घर-बारको छोड़नेमें अपनेको असमर्थ पा भगवानसे बोला—

भन्ते, मैं आपके उपदेशका श्रद्धान करता हूँ, प्रतीति करता हूँ, वह मुझे बहुत रुचिकर लगा है। पर मैं घर-बारको छोड़नेमें अपने आपको असमर्थ पाता हूँ। अतएव भन्ते, मुझे श्रावकके व्रत देकर अनुगृहीत करें।

भगवानकी दिव्यध्वनि प्रकट हुई—आयुष्मन्, जैसा तुम्हें रुचे, करो; प्रमाद मत करो।

भगवान्की अनुज्ञा पाकर आनन्दने कहा—भन्ते, मैं यावज्जीवनके लिए त्रस जीवोंकी सांकल्पिक हिंसाका त्याग करता हूँ, लोक-विरुद्ध, राज्य-विरुद्ध, आगम-विरुद्ध एवं पर-पीड़ा कारक असत्य वचन नहीं बोलूँगा; बिना दी हुई पर-वस्तुको नहीं ग्रहण करूँगा और अपनी स्त्रीके अतिरिक्त अन्य सबको माता, बहिन और बेटी समझूंगा। इस प्रकार चार अणुव्रतोंको ग्रहण कर परिग्रह-परिमाण व्रतको ग्रहण करनेके लिए उद्यत होता हुआ अपने विशाल वैभवको देखकर चकराया कि अपरिग्रह नामक पंचम व्रतको कैसे ग्रहण करूं ? जब अन्तर-से कोई समाधान नहीं मिला तो भगवानसे बोला—

भन्ते, अपरिग्रह व्रत किस प्रकार ग्रहण किया जाता है ?

उत्तर मिला—आयुष्मन्, परिग्रहका परिमाण तीन प्रकारसे किया जाता है—वर्तमानमें जितना परिग्रह हो, उसमेंसे अपने लिए आवश्यकको रख कर शेषका परित्याग करे, यह उत्तम प्रकार है। जो इसे स्वीकार करनेमें अपनेको असमर्थ पावे, वह वर्तमानमें उपलब्ध परिग्रहसे अधिक न रखने-का नियम करे, यह मध्यम प्रकार है। और जो इसमें भी अपनेको असमर्थ पावे, वह वर्तमानसे दूने, तिगुने परिग्रहको रखनेका नियम कर उससे अधिक-की इच्छाका परित्याग करे, यह जघन्य प्रकार है।

आनन्दने मनमें सोचा—मेरे बारह कोटि स्वर्ण दीनार हैं, पाँच सौ हलकी खेती होती है, चालीस बगीचे हैं, दस हजार गाएँ हैं, पाँच सौ रथ और गाड़ियाँ हैं, और इतना इतना धान्यादि है। इतने प्रचुर धन-वैभवसे मेरा जीवन निर्वाह भली-भांति हो रहा है, अतः अधिककी इच्छा करना व्यर्थ है। और, आज जितना वैभव है, उसका मैं आदी हो गया हूँ, अतः उसे कम भी नहीं कर सकता। ऐसा विचार कर भगवान्से बोला—

भन्ते, 'मैं मध्यम परिग्रह-परिमाणव्रतको अंगी-कार करता हूँ', ऐसा कहकर उसने वर्तमानमें प्राप्त धन-सम्पत्तिसे अधिक एक भी दमड़ी नहीं रखनेका संकल्प कर अपरिग्रहव्रतके मध्यम प्रकारको स्वीकार किया। इस प्रकार पंच अणुव्रत धारण किये। तद-नन्तर सप्त शीलोंको भी धारण कर और भगवान्-को नमस्कार कर वह अपने घरको वापिस लौट आया।

घर आकर उसने अधिकारियोंको अपने व्रत, ग्रहणकी सूचना दी और अपनी समस्त सम्पत्तिके चिट्ठा बनानेका आदेश दिया। अधिकारियोंने चिट्ठा बनाकर बताया कि आजके दिन आपका चार कोटि सुवर्ण दीनार व्यापारमें लगा हुआ है। चार कोटि सुवर्ण दीनार व्याजपर लोगोंको पूंजीके लिए दिया हुआ है और चार कोटि सुवर्ण दीनार समय-अस-मयपर काम आनेके लिए भण्डारमें सुरक्षित है। खेतोंमें बोनेके लिए सर्वप्रकारके धान्योंकी २५ हजार बोरियाँ कोष्ठागारमें रखी हुई हैं। दश हजार गायोंमेंसे एक हजार दूध दे रही हैं, और लगभग इतनी ही गाभिनें हैं। इसी प्रकार शेष अन्य समस्त सम्पत्तिकी सूची आनन्दके सामने उपस्थित की गई।

आनन्दने अधिकारियोंसे कहा—आज मैंने श्रमणोत्तम भगवान् महावीरके पास श्रावकके व्रत

ग्रहण किये हैं। उनमें परिग्रह-परिमाण व्रतके अन्तर्गत आजके दिन मेरे जितना परिग्रह है, उतनेसे अधिकका परित्याग किया है। अतएव आगे प्रतिदिन होनेवाली आमदनीसे मुझे सूचित किया जाय।

दूसरे दिन बगीचोंसे फलोंसे भरी हुई अनेक गाड़ियाँ आईं। आनन्द फलोंको देखकर मनमें विचारने लगा कि उन्हें बाजारमें बिकवानेसे तो धनकी नियमित सीमाका उल्लंघन होता है। अतएव इनका वितरण कराना ही ठीक होगा, ऐसा विचार कर घरके लिए आवश्यक फलोंको रखकर शेष फलोंको नौकर-चाकर, पुरा-पड़ौस और नगर-निवासियोंके घर भेंट-स्वरूप पहुँचा दिये। यह क्रम उसने सदाके लिए जारी कर दिया और बगीचोंसे प्रतिदिन आनेवाले फल नगरमें सर्वसाधारणको वितरण किये जाने लगे। इसी प्रकार जरूरतसे अधिक बचनेवाला दूध भी गरीबोंको वितरण किये जानेकी व्यवस्था की गई।

कुछ समयके पश्चात् खेतोंसे धान्यकी फसल तयार होकर आई। उसमेंसे जितना बीज बोया गया था, आनन्दने उतना भण्डारमें भिजवा दिया। कुछको वर्षभरके लिए घरू खर्चको रखकर शेष धान्य नगर-निवासी गरीब परिवारोंके घर भिजवा दिया। अकेले-दुकेलोंके लिए सदावर्त बटवानेकी व्यवस्था की, तथा वृद्ध, अनाथ अपंग, रोगी और अपाहिजोंको खाने-पीनेके लिए स्थान-स्थान पर भोजन-शालाएँ खोल दीं।

कालक्रमसे गायोंके जननेके समाचार आने लगे। तब आनन्दने अपने लिए नियत संख्याकी गाएँ रखकर शेष दूध देनेवाली गायोंको बाल-बच्चों वाले उन गरीब परिवारोंके घर भिजवा दिया, जिनके कि घर दूध नहीं होता था।

वर्षके अन्तमें मुनीमोंने व्यापारका वार्षिक चिट्ठा तैयार किया और बतलाया कि विभिन्न मदोंसे सब कुल मिलाकर इतने लाख रुपयोंकी नकद आमदनी हुई है। आनन्द तो प्राप्त पूँजीसे अधिक रखनेका त्याग कर चुका था। अतएव उसने अपने ग्राम और नगरके सारे निर्धन साधर्मी बन्धुओंकी सूची तैयार कराई और उनमेंसे प्रत्येकको यथायोग्य पूँजी प्रदानकर उनके जीवन-निर्वाहका मार्ग खोल दिया।

इस प्रकार वर्ष पर वर्ष व्यतीत होने लगे और आनन्दका यश चारों ओर फैलने लगा। लोग भगवान महावीरके धर्मकी प्रशंसा करने लगे। आनन्दके दिन भी आनन्दसे व्यतीत होने लगे। आनन्द करोड़ोंके अपने मूलधनको सुरक्षित रख करके भी महादानी और ग्राम, नगर एवं देश वासियोंके प्रेमका पात्र बन गया।

काश, यदि आजके धनिक लोग आनन्द सेठका अनुसरण करें, अपनेको प्राप्त वैभवका स्वामी न समझकर उसका ट्रष्टी या संरक्षक समझें, तो समाजमें जो विषमता और असन्तोष है, वह सहज ही दूर हो जाय। धनिकोंका धन भी सुरक्षित बना रहे और वे सर्वके प्रेम-भाजन बनकर सुख-शान्तिमय जीवन-यापन कर सकें। ऐसा करनेसे परिग्रहको जो पाप कहा गया है, उसका प्रायश्चित्त भी सहजमें हो जाता है। तथा सम्पत्तिका संग्राहक और उपभोक्ता सहजमें दातार बनकर यशोभागी बनता है और एक महान पुरुष बन संसारके सामने आता है।

ऐतिहासिक कहानी—

आनन्द श्रावक

श्री पं० हीरालाल जी, सिद्धान्तशास्त्री, साढूमल

भ० महावीर के समय वैशाली अति समृद्धिशाली नगरी थी। उसके समीप वाणिज्य ग्राम नाम का एक समृद्ध व्यापारिक प्रतिष्ठान था। वहाँ पर आनन्द नाम का एक बहुत बड़ा धनी सेठ रहता था। उसके पास अपार सम्पत्ति थी। उसकी सम्पत्ति के विषय में बताया गया है कि चार करोड़ रुपया उसके कोषागार में सदा सुरक्षित रहता था। चार करोड़ रुपया ब्याज पर लगा हुआ था। उसके चार गोकुल थे और प्रत्येक गोकुल में दस-दस हजार गायें थीं। उसके पाँच सौ हलों की खेती होती थी। उसके यहाँ पाँच सौ गाड़ियाँ थीं जो व्यापार के लिए देश-देशांतरों को जाया-आया करती थीं। अनेक बाग-बगीचे थे, जिनमें नाना प्रकार के फल और फूल वाले वृक्ष थे। सारे राज्य पर उसकी धाक थी और सभी राज्याधिकारी उसका सम्मान करते थे।

आनन्द सेठ पहले बुद्धधर्म का अनुयायी था और धर्मदेशना सुनने के लिए प्रायः उनके ही पास जाया-आया करता था। एक बार जब विहार करते हुए भगवान् महा; वीर का समवसरण वैशाली आया तो नगर निवासी और समीपवर्ती ग्रामों का जन-समुदाय उनकी बन्दना करने और देशना सुनने के लिए उमड़ पड़ा। आनन्द सेठ भी अपने परिवार के साथ गया और भगवान् की बन्दना करके यथा स्थान बैठकर धर्मदेशना सुनने लगा।

भगवान् की धर्मदेशना इतनी प्रभावक हुई कि उसे सुन कर सैकड़ों पुरुषों ने घर का परित्याग करके अनगार दीक्षा ग्रहण की और वे महाव्रतधारी साधु बन गये। आनन्द सेठ भी बहुत प्रभावित हुआ और राज्याधिकारियों, अनेक स्वजन-परिजनों एवं मित्रों को दीक्षित हुआ देखकर सोचने लगा—अहो, ये लोग धन्य हैं जो सबसे मोह छोड़कर दीक्षित हो गये हैं। परन्तु मेरा मोह तो कितना प्रगाढ़ है जो न सम्पत्ति से ही छूट रहा है और न कुटुम्ब-परिवार से हा। मन ही मन कहने लगा—मैं क्या करूँ, क्या मेरा उद्धार नहीं होगा? इस प्रकार के अन्तर्द्वन्द्व से कुछ बेचैनी का अनुभव करता हुआ वह बोला—

'भगवान्, मैं आपके इस निर्ग्रन्थ प्रवचन का श्रद्धान करता हूं, आपका प्रवचन मुझे बहुत रुचिकर लगा है, आपने जैसा कहा है वह सत्य है, यथार्थ है और धर्म का स्वरूप ऐसा ही है। मैं इसे चाहता हूँ, ग्रहण करने की भावना रखता हूं। किन्तु अनेक राज्याधिकारी, नगर रक्षक, सेठ-साहूकार और मेरे अनेक कुटुम्बीजन मुंडित होकर और घर-बार छोड़कर जिस प्रकार अनगारी प्रव्रज्या के धारक हो गये हैं, उस प्रकार से मैं घर-बार छोड़ने और मुंडित होकर अनगारी प्रव्रज्या धारण करने के लिए अपने को असमर्थ पाता हूं। अतः भगवान्, मैं आपके पास पाँच अणुव्रत और सात शिक्षा व्रत रूप बारह प्रकार का गृहस्थ धर्म धारण करता हूँ।

भगवान् ने कहा— हे देवानुप्रिय, जैसे सुख हो वैसा करो, प्रतिबन्ध मत करो। तत्पश्चात् आनन्द सेठ ने यथा विधि एक-एक करके जब चार अणुव्रतों को स्वीकार कर लिया और पाँचवे अपरिग्रह व्रत को स्वीकार करने का अवसर आया तो सोचने लगा कि जितना मेरे पास आज परिग्रह है, उसमें से तो रत्ती भर भी छोड़ने के लिए मेरा मोह दूर नहीं हो रहा है? अब मैं क्या करूँ? यह विचार कर उसने भगवान् से पूछा—भगवन्, परिग्रह परिमाण व्रत की क्या विधि है? भगवान ने कहा—वर्तमान में जितना परिग्रह हो, उसमें से आवश्यकता के अनुसार रख कर शेष का परित्याग करना उत्तम परिग्रह परिमाण व्रत है। जो ऐसा करने में असमर्थ हो वह वर्तमान में जितना है उसका नियत रखकर नवीन उपार्जन का परित्याग करे, यह मध्यम परिग्रहपरिमाण अणुव्रत है और जो ऐसा भी न कर सके तो दुगुने, तिगुने आदि के रखने का नियम कर आगे से उपार्जन का त्याग करे, यह जघन्य परिग्रह परिमाण अणुव्रत है।

भगवान् का यह उत्तर सुनकर और कुछ क्षण तक विचार कर आनन्द बोला—भगवन्, मेरे पास आज जितनी

सम्पत्ति है, उससे अधिक के उपार्जन का मैं परित्याग करता हूं और मध्यम परिग्रह परिमाण व्रत अंगीकार करता हूँ।

तत्पश्चात् आनन्द ने एक-एक करके सातों शिक्षा-व्रतों को स्वीकार किया और श्रावक धर्म को धारण करके भगवान का उपासक हो गया। जब वह भगवान् की वंदना करके घर पर आया तो उसने अपने कर्मकरों को आदेश दिया—आज मेरे पास जितनी सम्पत्ति है और धन-धान्य आदि का जितना संग्रह है, उस सब की सूची बनाकर मुझे दो। जब सब परिग्रह की सूची आनन्द को दी गई, तब उसने कर्मकरों से कहा—आगे से कोई भी लेन-देन या क्रय-विक्रय मेरे से पूछे बिना न किया जाय। यह कहकर उसने सब को विसर्जित कर दिया।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही गोकुल से गायों का दुहा हुआ सैकड़ों घड़ों में भरा हुआ दूध आया। सदा तो घर के लिए आवश्यक दूध रखकर शेष को बेच दिया जाता था; किन्तु अब तो वह नवीन उपार्जन का त्याग कर चुका था, अतः उसने कर्मकरों से कहा—आज से आगे दूध बेचा नहीं जायगा। कर्मकरों ने पूछा—फिर इस दूध का क्या किया जाय? आनन्द बोला—जिन लोगों के यहाँ बाल-बच्चे हैं और दूध का प्रबन्ध नहीं है, उनके यहाँ आज से जन-संख्या के अनुसार दूध भेजा जाय। कर्मकरों ने आदेश को स्वीकार किया और नगर भर में उस दिन से गरीबों के यहाँ दूध वितरित होने लगा।

कुछ देर के बाद फलों से लदी हुई अनेक गाड़ियाँ बगीचों से आईं। उनके लिए भी आनन्द ने आदेश दिया—आज से फल आपण (बाजार) में बिकने नहीं जाएँगे क्योंकि बिक्री का धन मैं कहाँ जमा करूंगा? मैंने तो नवीन अर्थसंग्रह का त्याग कर दिया है। कर्मकरों ने पूछा—इन फलों का क्या किया जाय? आनन्द ने कहा—जिसके यहाँ फलादि के साधन नहीं हैं ऐसे लोगों के घर यथोचित मात्रा में प्रतिदिन फल भिजवाए जाएँ। आदेश के अनुसार वैसा ही किया जाने लगा।

कुछ दिनों के पश्चात् खेतों से धान्य की भरी हुई गाड़ियाँ आईं। आनन्द ने अपनी सूची देखकर कहा—इतने धन्य को कोष्ठागार में रखकर शेष अन्न अभाव पीड़ित जनों के यहाँ भिजवा दिया जाय। क्योंकि उसे बेचने पर नवीन धन को कहाँ जमा किया जाय?

वर्ष के अन्त में लोगों के यहाँ से—जो चार करोड़ रुपया ब्याज पर था, उसके ब्याज का लाखों रुपया आया। आनन्द ने सोचा—इसे घर में तो रख नहीं सकता। क्योंकि ऐसा करने पर तो परिग्रह परिमाण का उल्लंघन होता है। कुछ क्षण सोचने के पश्चात् उसने नगर में घोषणा करा दी कि जिसे भी व्यापार के लिए पूंजी की आवश्यकता हो, वह मेरे पास से पूंजी ले जावे। जब लोग आये तो उन्हें यथोचित पूंजी देकर कहा—'इसके वापिस करने की चिन्ता मत करना, जब तुम्हारे पास पर्याप्त धन हो जाय तो तुम भी किसी आवश्यकता वाले व्यक्ति को इसे पूंजी के लिए दे देना।' इसी प्रकार वर्ष के अन्त में व्यापार से प्राप्त अपार धन के द्वारा दानशाला, औषधालय, स्वाध्यायशाला और धर्मशाला आदि का निर्माण करा कर अनेक संस्थाएँ स्थापित कर दी गईं। जब गोकुल के अधिकारियों ने आकर कहा—'आज इतनी गायों ने प्रसव किया है, उनका क्या किया जावे?' तब अपनी स्वीकृत संख्या के अतिरिक्त शेष प्रसूता गायों को उसने गरीबों के घर दूध पीने के लिए भिजवा दिया।

आनन्द श्रावक के इस परिग्रह-परिमाणव्रत से सारे नगर और देशवासी सुख सम्पन्न हो गये और सभी के मुख से यह शब्द निकलने लगे—'अहो देखो! आनन्द ने भ० महावीर के समीप अपरिग्रहव्रत को स्वीकार करके सारे नगर और देश में आनन्द ही आनन्द कर दिया है।' आनन्द के द्वारा स्थापित संस्थानों में आकर सहस्रों अनाथ, रुग्ण एवं अभाव-पीड़ित लोग शरण पाकर उसका यशोगान करने लगे। इस प्रकार आनन्द श्रावक अपनी मूल सम्पत्ति को सुरक्षित रख कर के भी दानवीर बन गया और उसके द्वारा भगवान् के शासन की महती प्रभावना हुई। काश, आज के धनिक जैन भी आनन्द सेठ का अनुसरण करें तो भगवान् महावीर के शासन की प्रभावना आज संसार में सहज ही हो जाय।